गांव का पेड़

तारो याशिमा

गांव का पेड़

तारो याशिमा

क्या तुम दूर पूर्व में उस देश को जानते हो,
जिसे हम लोग जापान कहते हैं?

क्या तुम्हें पता है, कि वहां पर भी तुम्हारे जैसे ही
तमाम बच्चे हैं?
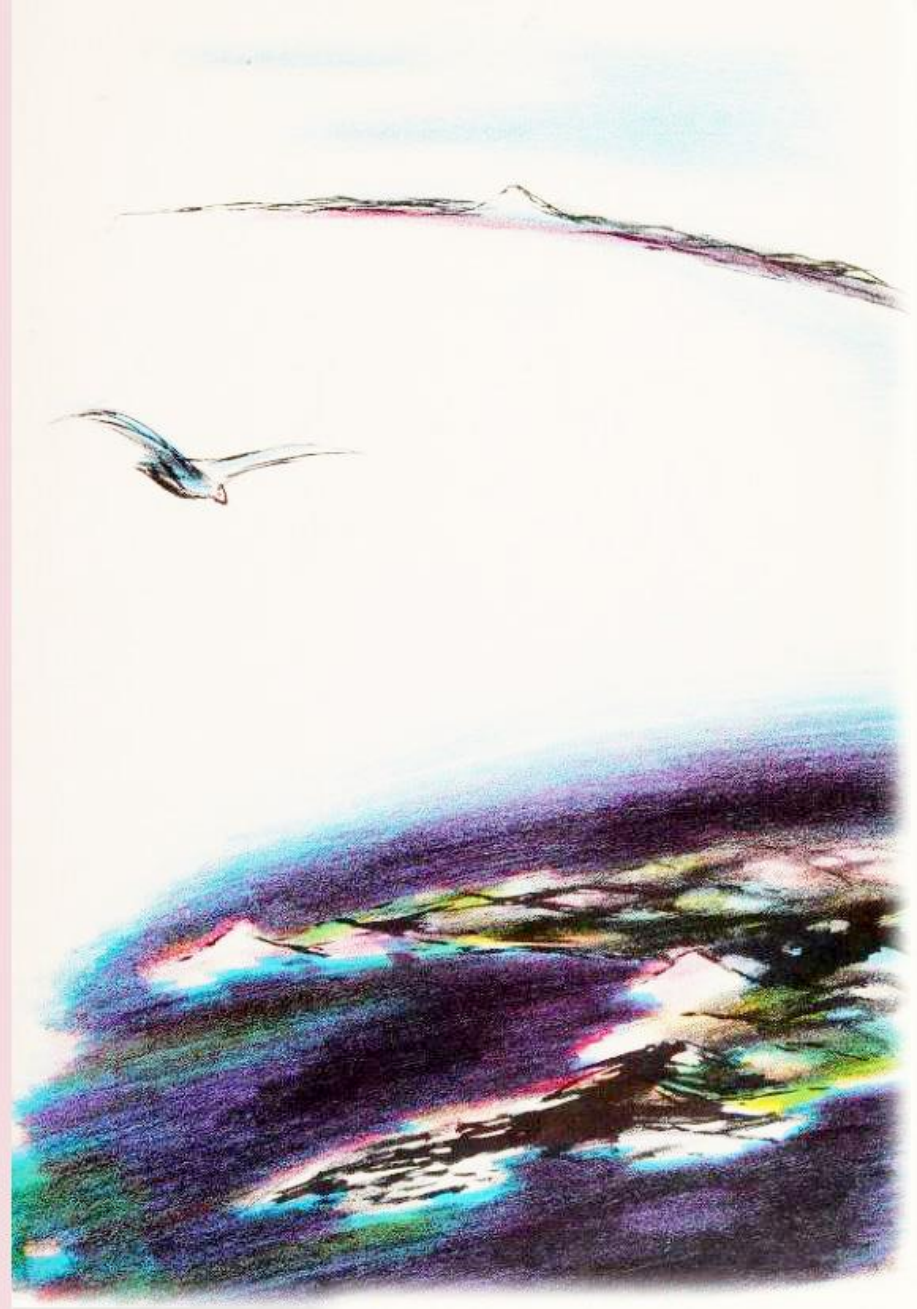
जिस गाँव में मैं पला-बढ़ा था वो दक्षिण में दूर एक द्वीप पर स्थित था.

वहां गांव के बीचों-बीच, पानी की एक नदी बहती थी,

और उसके किनारे एक बड़ा पेड़ खड़ा था.

गर्मी आते ही पेड़ नए हरे पत्तों से लद जाता था और खुद को ढकने लगता था. साथ में नदी भी एक जीवंत रूप में बहने लगती थी.

सुबह होते ही झींगुर पेड़ पर एक-साथ गाना शुरू कर देते थे और तब हम बच्चे घर पर शांत नहीं बैठ सकते थे.
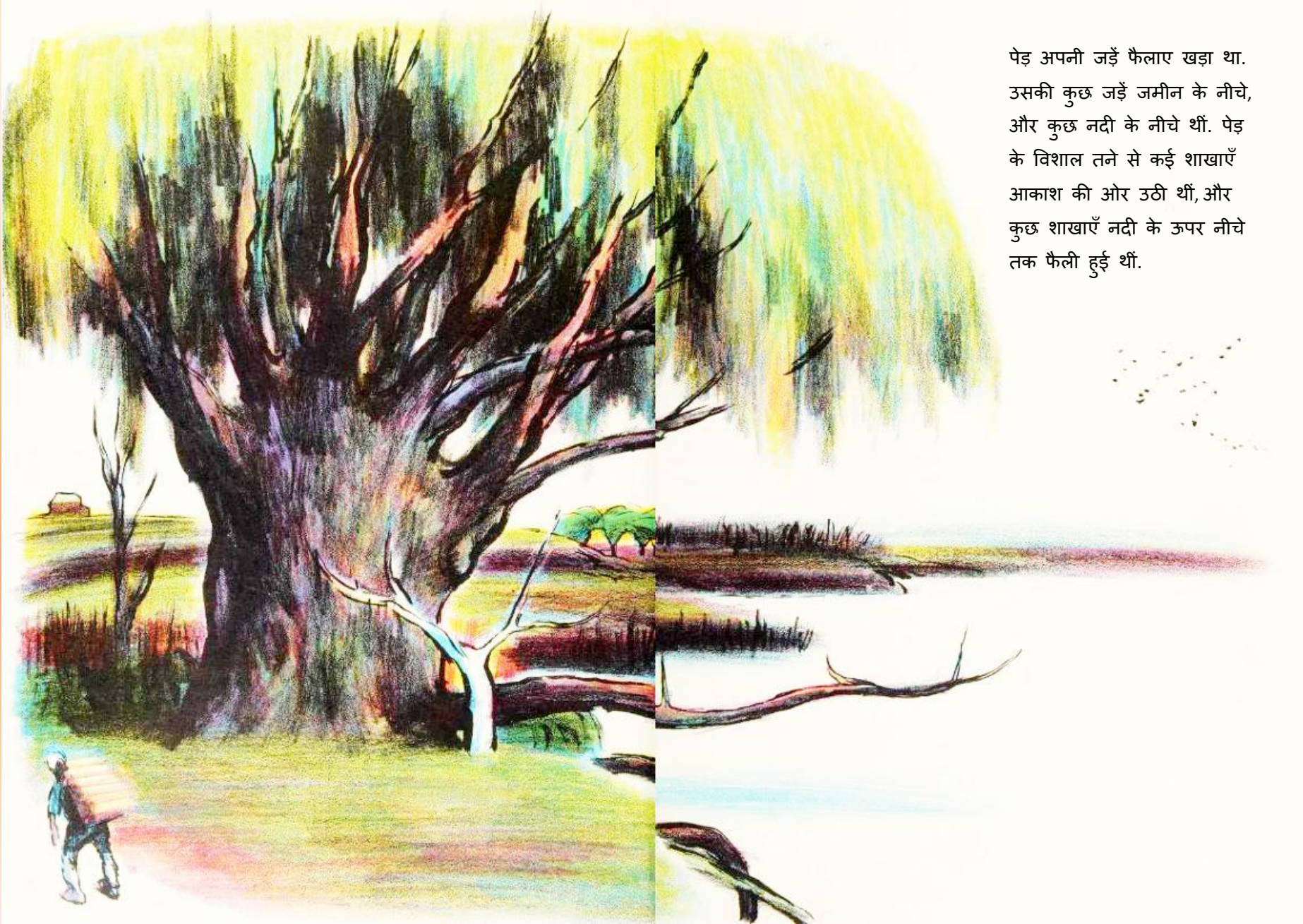
पेड़ अपनी जड़ें फैलाए खड़ा था. उसकी कुछ जड़ें जमीन के नीचे, और कुछ नदी के नीचे थीं. पेड़ के विशाल तने से कई शाखाएँ आकाश की ओर उठी थीं, और कुछ शाखाएँ नदी के ऊपर नीचे तक फैली हुई थीं.

हम दौड़ते-दौड़ते पेड़ की तरफ भागते थे. हम अपने कपड़े झपटकर उतारते और दौड़ते समय उन्हें बांस की झाड़ियों या घास में फेंक देते थे.
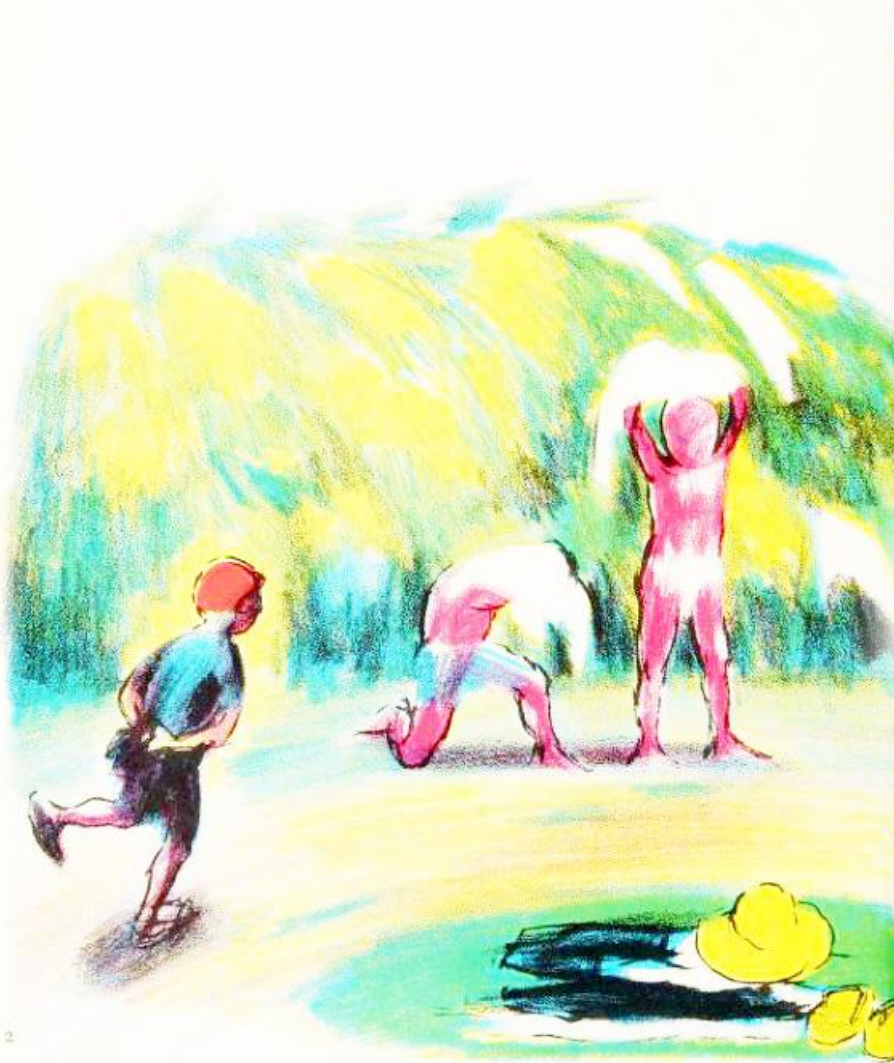
बड़े बच्चे तने पर चढ़कर ऊंची शाखाओं पर चढ़ जाते थे. छोटे बच्चे निचली शाखाओं पर चढ़ जाते थे. पर शिशु हमें जमीन से खड़े-खड़े ही देखते थे.

हमें पत्तों पर तरह-तरह के कीड़े-मकोड़े मिलते
और शाखाओं में खेलने की जगहें मिलती थी.
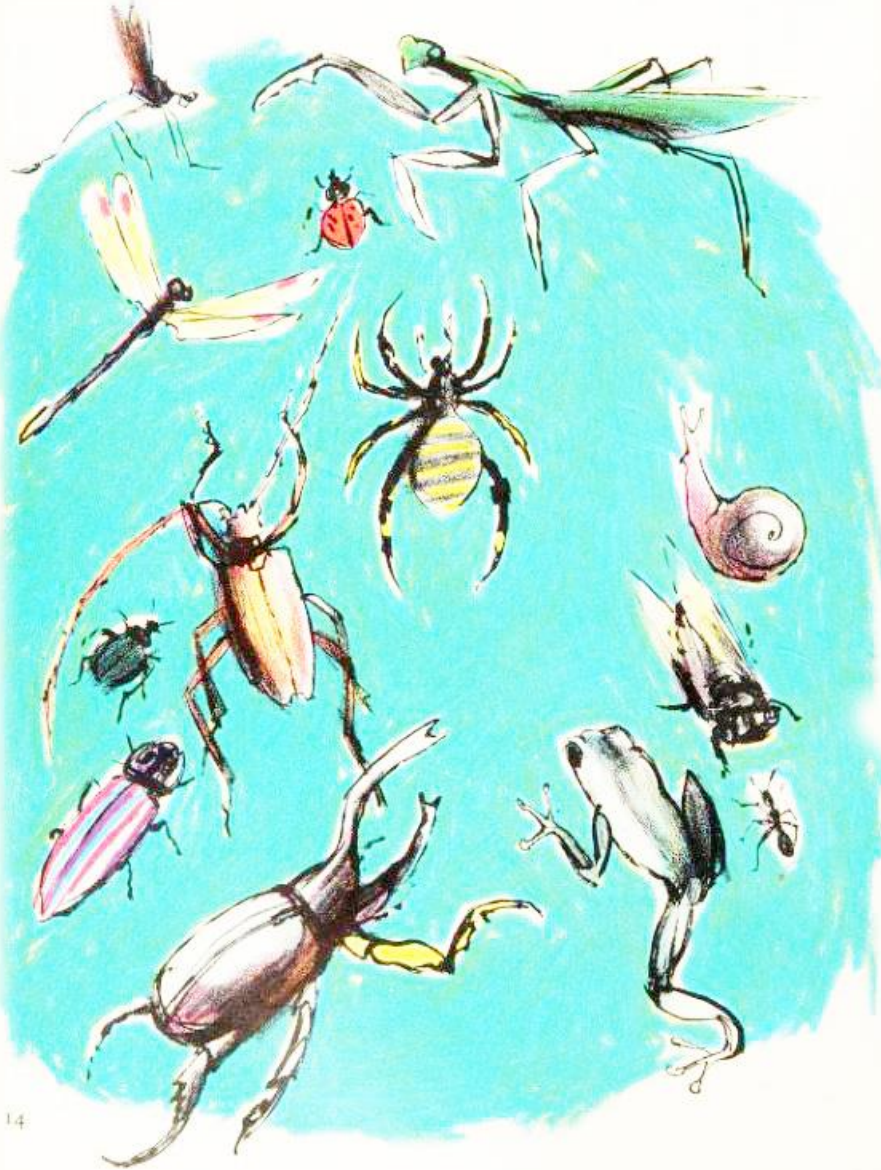
एक शाख तो बिल्कुल झूलता हुआ खंभा थी.

पेड़ का एक मोड़ हमारी कुर्सी थी.
एक और तने के मोड़ में हमने एक घर बनाया था.

जो खाना हम घर से लाते थे वो वहां बहुत स्वादिष्ट लगता था.
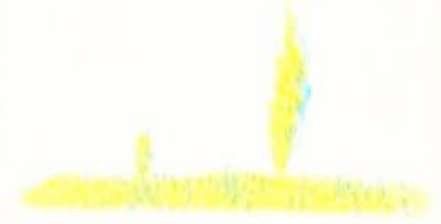
जब सूरज पेड़ के ठीक ऊपर आ जाता तो हमें गर्मी लगती थी.

तब हम पानी में कूद जाते थे.

हम सभी ने कूदने के अलग-अलग तरीके सोच निकाले थे.

पानी एकदम ठंडा और साफ था. वो खेलने के लिए बिल्कुल सही था.

छिपे हुए बांस के पत्तों को खोजने के खेल को "बांस-छुपाई" कहा जाता था.

पत्तों की जगह पत्थर ढूंढना "पत्थर-छुपाई" कहलाता था.

जब कोई लड़का "ई-ई!" कहते हुए आपकी ओर छलांग लगाता तो वो एक रेल के इंजन की तरह दिखता था.

हम एक-साथ पत्थर फेंकते थे और उनकी कच-कच की आवाज हमारे कानों में पड़ती थी.

हाथों के बल खड़े होना हमारे लिए बहुत आसान था.

हमारे बीच एक प्रतियोगिता थी कि कौन पानी के अंदर अधिक दूर तक तैर सकता था.

कभी-कभी कुछ बड़े लोग वहां अपने घोड़े को नहलाने लाते थे और हमें घोड़ों पर सवार होने का मौका देते थे.

यहाँ तक कि कुत्ते, मुर्गियाँ और साँप भी वहां हमारे साथी थे.

एक लड़का अपनी माँ का कपड़े धोने वाला टब वहां लाया और फिर हमने बारी-बारी से उसे नाव जैसे खेया.

बांस के बड़े-बड़े खंभे अद्भुत तरह से तैरते थे.

जब हम तैर कर थक जाते तो हम में से कुछ लोग रेत के तट पर पानी डालकर एक स्लाइड बनाते थे.

हम में से कुछ लोग मिट्टी से कुछ खिलोने बनाते थे. वो मिट्टी हमें नदी के किनारे एक गुप्त स्थान पर मिली थी.

जब हमें ठंड लगती, तो हम तैरकर नदी के उस पार समुद्र तट पर चले जाते थे.

वहां के उथले पानी को सूरज ने खूब गर्म किया होता था.
वहां हमने गर्म स्नानागार बनाते और खुद को भी गर्म करते थे.

जलती हुई रेत को हाथों में लेकर
हम गर्म पानी के पोखर बनाते थे.

वहां पर हम केकड़ों और
कीड़ों की रेस कराते थे.
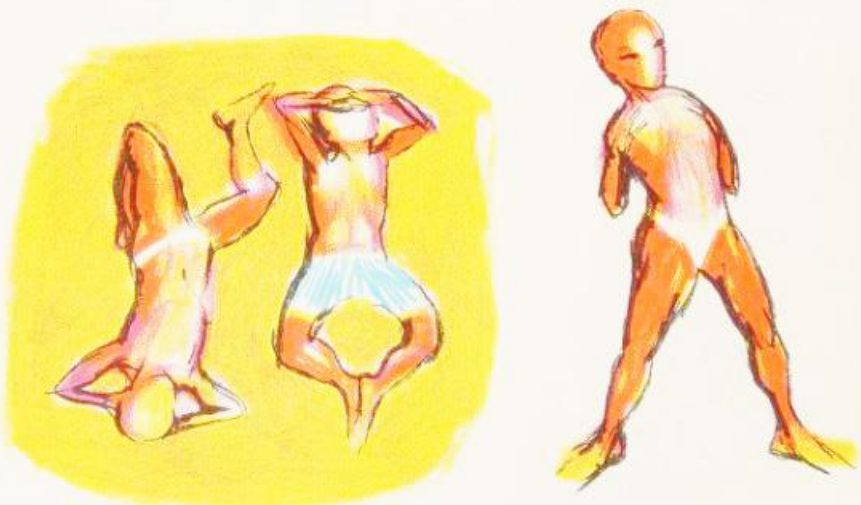
बाद में हम गर्म रेत पर लेट जाते जिससे हमारा शरीर जल्द
ही सूख जाता था और फिर हम तरोताजा महसूस करते थे.

वहां पर हम कुश्ती और पोल
जंपिंग खेलते थे.
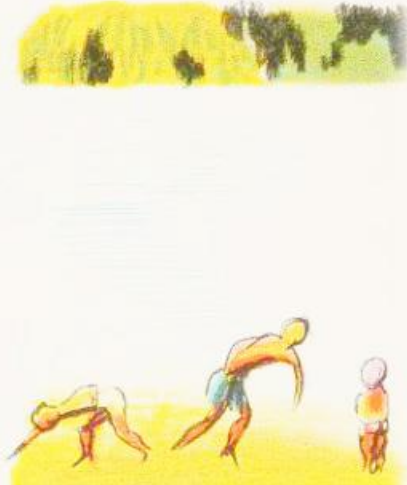
वहां हम पत्थर फेंकते थे यह देखने
के लिए कि हम में से कौन पत्थर
सबसे दूर फेंक सकता था.

कभी-कभी आस-पास के खेतों से
बड़े-बूढ़े हमें तरबूज दे देते थे.

कभी-कभी वे अपने बछड़ों और घोड़ों को चराने
के लिए किनारे के पास के चरागाह में लाते थे.

कभी-कभी गाँव-गाँव जाकर बेचने वाला एक
फेरीवाला वहां आकर हमें दूर-दूराज़ की
कहानियाँ सुनाता था.

बड़ों को पता था कि नदी
में मछलियों को कई
अलग-अलग तरीकों से कैसे
पकड़ा जाता था.
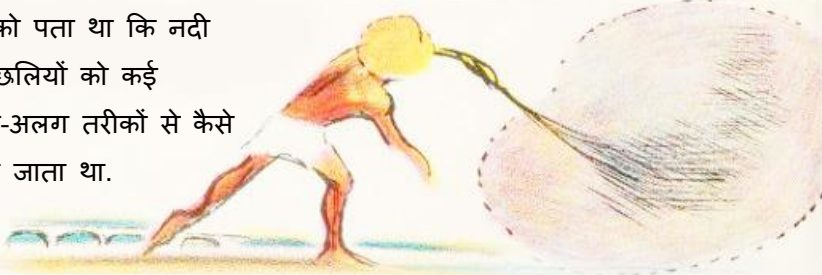
पानी में अनेक प्रकार की मछलियाँ थीं.
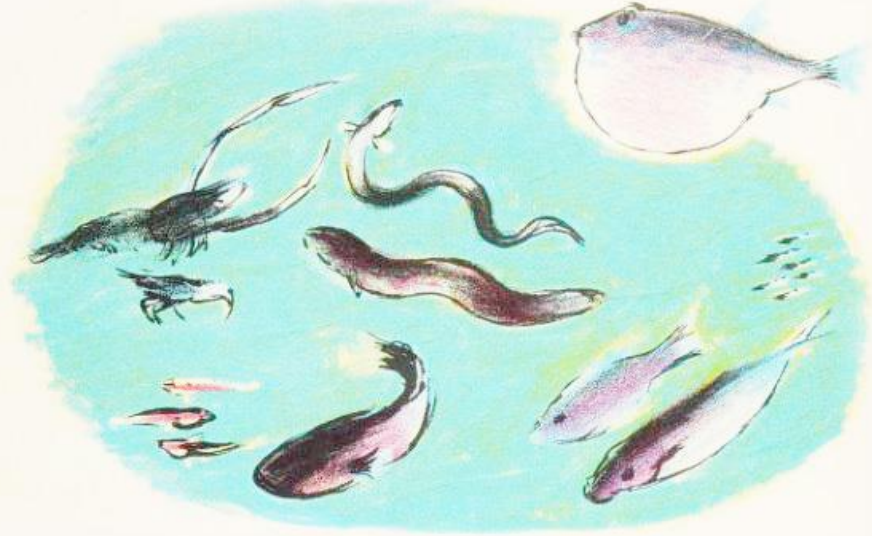
झींगा मछलियों को तालाब के घोंघों का मांस सबसे पसंद
था. जब झींगा मछलियां खाने के लिए बाहर निकलती
थीं तो हम उन्हें बहुत आसानी से पकड़ लेते थे.

लेकिन जैसे ही सूरज पहाड़ी से नीचे ढलता था, तब समुद्र का तट,
छाया से ढक जाता था और पानी अचानक ठंडा हो जाता था.

फिर हम सब तैरकर वापस नदी के उस
पार अपने पेड़ के पास वापिस आ जाते थे.
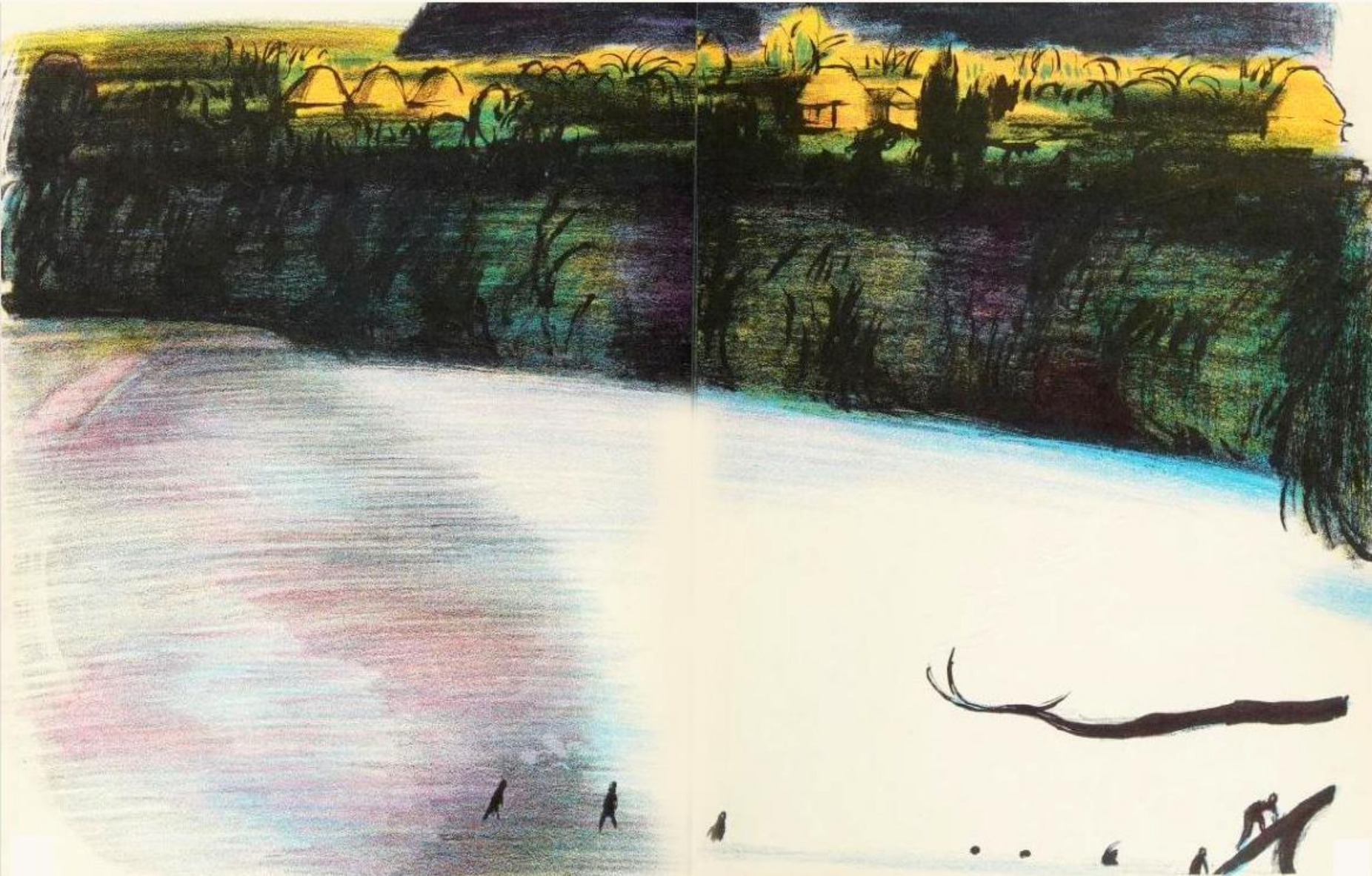
पेट खाली होने के कारण हम जल्दी से अपने कपड़े पहनते थे.

फिर हम एक-दूसरे से कहते, "कल मिलेंगे?" "क्यों नहीं!"
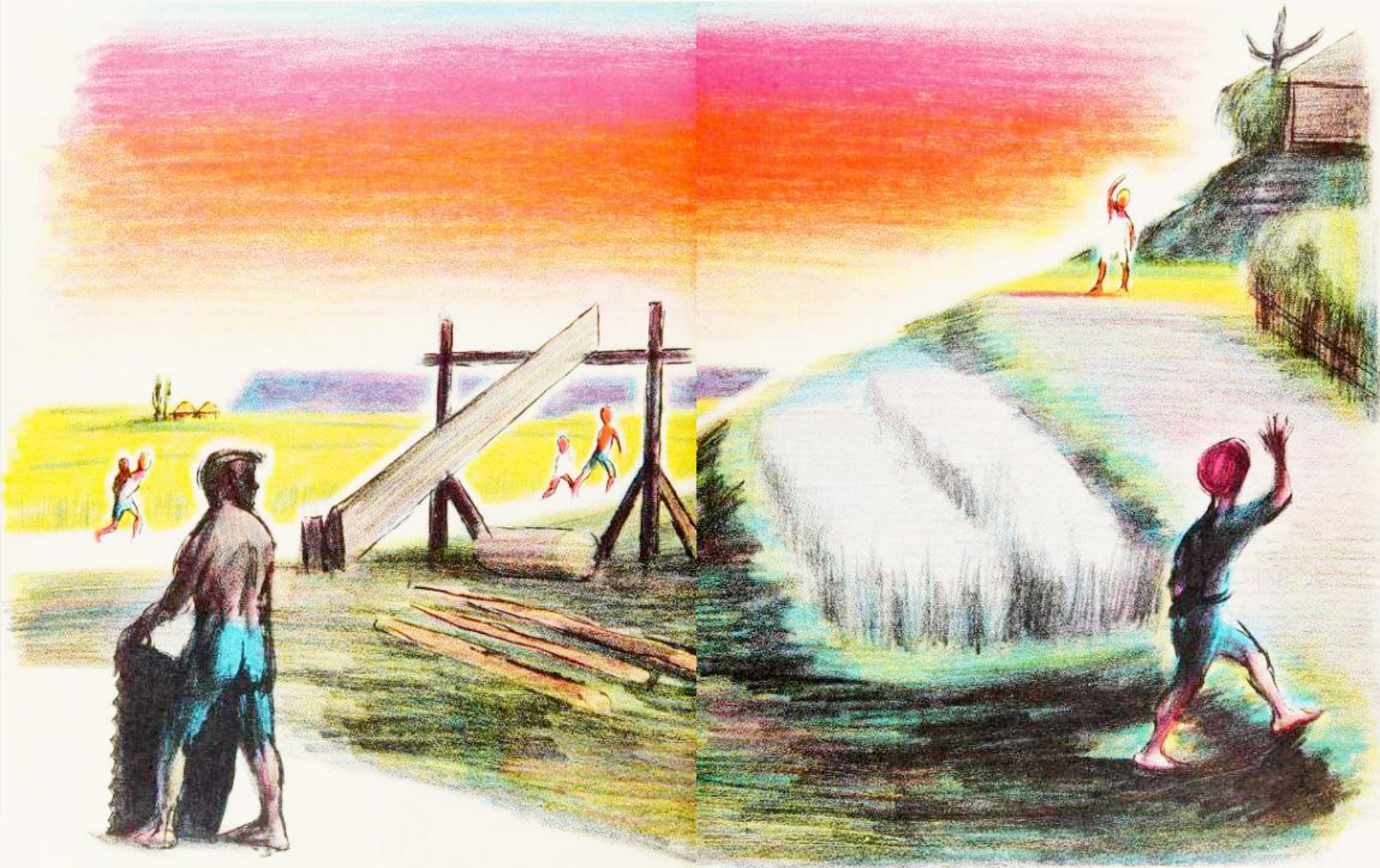
जब मैं बहुत सारे झींगे घर लाता, तो रात के खाने की मेज पूरे परिवार के लिए अधिक आनंददायक हो जाती थी.

घोड़े, बिल्ली और मुर्गे को भी झींगे पसंद थे.
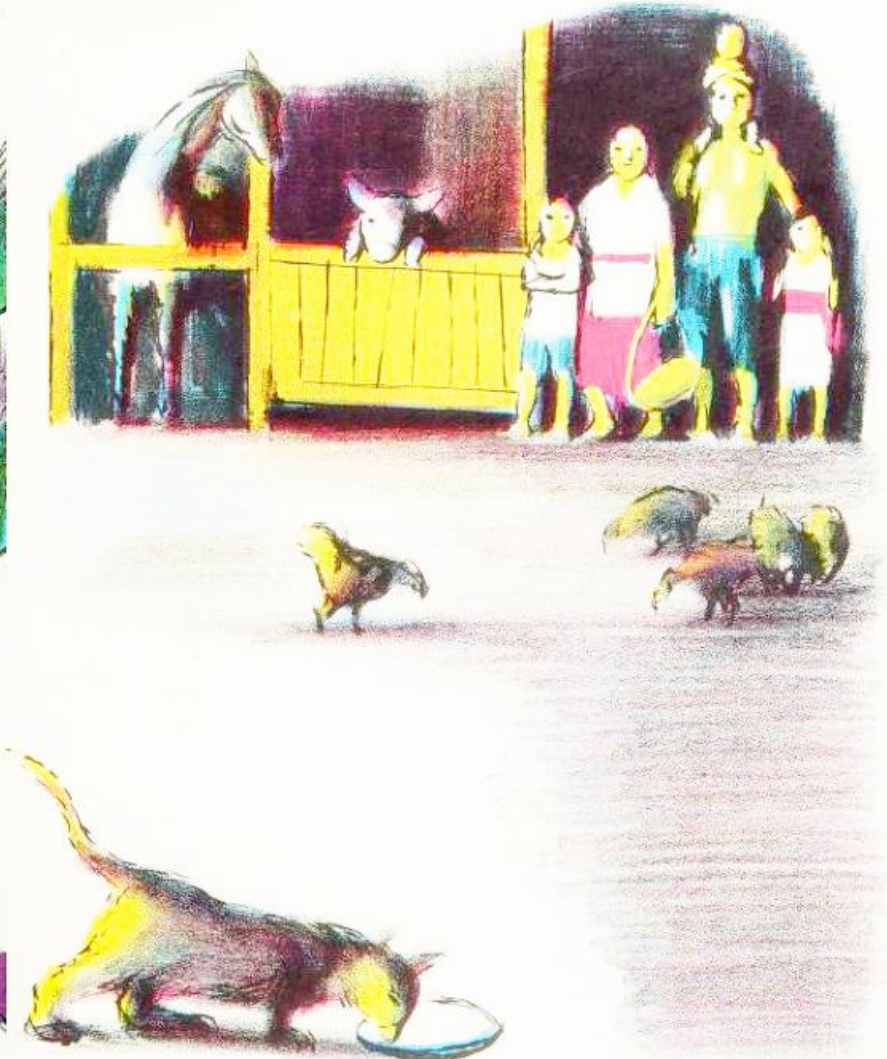
जब कोई आसपास नहीं होता तब भी पेड़ हमेशा
बड़े धैर्य से वहीं खड़ा रहता था. वो बस इंतज़ार
करता था, बच्चों के आने का इंतज़ार करता था.

और इसलिए, जब मैं बड़ा हुआ तब भी वो पेड़ वैसे ही खड़ा था.

लोग कहते हैं कि वो पेड़ अभी भी वहीं खड़ा है, और धैर्य से किनारे पर खड़ा प्रतीक्षा कर रहा है.

मुझे उन्हीं पुराने खेलों को खेलने वाले बहुत से बच्चों की आवाजें सुनाई दे रही हैं.